P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-4* July- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

उच्च माध्यमिक स्तर पर आरक्षित वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

करणी सिंह
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

ममता पारीक
प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
एस.एस.जी.पारीक स्नातकोत्तर
शिक्षा महाविद्यालय,
जयपुर

सारांश

भारतीय संविधान में संवैधानिक और सांविधिक रूप से आरक्षण की व्यवस्था द्वारा समस्त आरक्षित वर्गों को विभिन्न अवसरों की उपलब्धता ने शैक्षिक सुविधाओं में वृद्धि के साथ–साथ उनके पिछड़ेपन में कमी की है। साथ ही शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि के मार्ग को भी प्रशस्त किया है। शैक्षिक उपलब्धि बालक द्वारा अधिगमित एवं प्रयोग में लाये गये ज्ञान को मापने का सर्वोत्तम साधन है। इस शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग की छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि स्तर में समानता तथा अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की तुलना में कमी पायी गयी।

मुख्य शब्द : आरक्षित वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग एक लम्बे समय तक उपेक्षित, प्रताड़ित और शैक्षिक सुविधाओं से वंचित रहा। इन वर्गों का यह पिछड़ापन इनके जीवन में किसी न किसी प्रकार की असंतुष्टि का कारण बना। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग को इसलिए आरक्षित किया गया, ताकि जो योग्यताएँ सांस्कृतिक विलम्बन के कारण छिप गई, उनका प्रदर्शन हो सके तथा योग्यतानुसार प्रतिफल की प्राप्ति के साथ एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण हो।

भारतीय संविधान में संवैधानिक और सांविधिक रूप से आरक्षण की व्यवस्था द्वारा समस्त आरक्षित वर्गों को विभिन्न अवसरों की उपलब्धता नें शैक्षिक सुविधाओं में वृद्धि के साथ–साथ उनके पिछड़ेपन में कमी की है। शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मार्ग को भी प्रशस्त किया है। विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उन्हें संतुष्टि भी प्रदान करती है। लेकिन आज भी छात्र एवं छात्राओं के प्रति पारिवारिक दृष्टिकोण में भिन्नता पायी जाती है।

शिक्षण प्रक्रिया में रत विद्वजन विभिन्न स्तर के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण उद्देश्य निर्धारित करते हैं तथा इनकी प्राप्ति के लिए शिक्षण अधिगम क्रियाओं का आयोजन करते हैं। विद्यार्थी द्वारा जिस सीमा तक इन उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया जाता है, वही उसकी शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है। शैक्षिक उपलब्धि, बालक द्वारा अधिगमित एवं प्रयोग में लाये गये ज्ञान को मापने का सर्वोत्तम साधन है। शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर ही विभेदन द्वारा यह ज्ञात किया जा सकता है कि बालक किस श्रेणी में आता है; अर्थात् वह प्रतिभाशाली है, सामान्य है या पिछड़ा है।

आत्मानन्द मिश्र (1977) के अनुसार ''शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त ज्ञान या शालेय विषयों में विकसित प्रवीणता या कुशलता है, जो कि प्रायः परीक्षणों में प्राप्त अंकों द्वारा या शिक्षक द्वारा दिये गये अंकों या दोनों द्वारा निश्चित की गई हो।''

उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मापन शिक्षण संस्थाओं के लिए छात्राओं की शक्ति का केन्द्र बिन्दु जानने और सुधार के लिए क्षेत्रों की पहचान करने में लाभदायक हो सकता है। विद्यालय की एक ही कक्षा में एक तरफ तो ऐसी छात्राऐं होती हैं जिनकी शैक्षिक उपलब्धि सामान्य से अधिक होती है; तो दूसरी तरफ, उन्हीं परिस्थितियों में कुछ ऐसी छात्राऐं भी होती हैं जिनकी शैक्षिक उपलब्धि सामान्य या सामान्य से कम होती है। इसी महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस समस्या का चयन अध्ययन हेतु किया गया।

शोध का उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर पर आरक्षित वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

फ्रेंक एस. फ्रीमेन के अनुसार– ''शैक्षिक निष्पत्ति वह अभिकल्प है जो कि एक समय विशेष पर पाठ्यक्रम के विभिन्न नियमों का ज्ञान एवं कुशलता का मापन करता है।'' शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थियों के कक्षागत विषयों में प्राप्तांकों से लगाया जा सकता है। प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निर्मित परिकल्पनाओं का दत्त संकलन के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार आरक्षित वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया। इसके परिणाम शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर पूर्व में हुए अलग–अलग शोधकार्यों के अनुक्रम में हैं, जहाँ राय, गीता (2014) द्वारा किये गये शोध अध्ययन के परिणाम उत्तराखण्ड राज्य के माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर और अकादमिक प्रदर्शन पर उन विद्यार्थियों के अभिभावकों के प्रोत्साहन प्रभाव का धनात्मक संबंध प्रदर्शित करते हैं। पाण्डेय एवं पाण्डेय (2009) द्वारा किये गये शोध अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच परिमित धनात्मक सहसंबंध उपस्थित है तथा विद्यार्थियों में सामाजिक एवं आर्थिक भिन्नता के बावजूद जवाहर नवोदय विद्यालय, ज्ञानपुर, सभी विद्यार्थियों को एक समान शैक्षिक वातावरण उपलब्ध करवाता है जो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को समान रूप से प्रभावित करता है। प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि स्तर में समानता पायी गयी तथा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि स्तर में अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं से सार्थक अन्तर पाया गया जो कि पूर्व में हुए शोध के परिणामों से पुष्ट होता है; जहाँ दास, रश्मिता (1994) द्वारा किये गये शोध अध्ययन के विश्लेषणानुसार अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन स्तर में समानता पायी गयी तथा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन स्तर में सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों से सार्थक अन्तर पाया गया। अरिआनि एवं मिरदाद (2015) द्वारा किये गये शोध अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए स्कूल डिज़ाइन एक महत्त्वपूर्ण कारक है तथा शारीरिक अधिगम क्षेत्र एवं निजी स्कूल डिज़ाइन वाली विशेषताएँ विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर मौलिक प्रभाव डालती हैं। कमात्ची (2014), पन्य (2014), अब्राहम (2014), दुग्गल (2014), लॉरेन्स (2014), यादव (2014), पिल्लै (2014), यादव (2013), सक्सेना एवं लक्ष्मी (2013), बत्रा (2011), शर्मा (2011), सैनी (2010), शैल (2003), इब्राहिम एवं मेहमेत (2014), चुआन एवं अन्य (2013), अकपोन्ग एवं जॉर्ज (2013), सावस्की एवं तोमूल (2013), अदनान एवं अन्य (2012), ट्रान एवं लेविस (2012), आफरी एवं स्वेखिन (2012) नें अपने अध्ययन शैक्षिक उपलब्धि तथा अन्य भिन्न चरों के साथ किये; किन्तु उच्च माध्यमिक स्तर पर आरक्षित वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि आधारित कोई अध्ययन भारत या विदेशों में सम्पन्न अध्ययनों में प्राप्त नहीं हुआ। अतः शोधकर्त्ता द्वारा यह अध्ययन, उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया।

शोध परिकल्पना

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई।

शोध उपकरण

शैक्षिक उपलब्धि मापनी (शैक्षिक उपलब्धि मापन हेतु छात्राओं की कक्षा 10 में प्राप्त अंको को आधार बनाया गया क्योंकि यह परीक्षा बोर्ड द्वारा एक समान पद्धति के आधार पर ली जाती है।)

शोध न्यादर्श

शोधकर्त्ता द्वारा इस शोधकार्य हेतु न्यादर्श के रूप में झुझुनूँ जिले के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से सम्बद्ध उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 300 छात्राओं को; 100 अनुसूचित जाति से, 100 अनुसूचित जनजाति से तथा 100 अन्य पिछड़ा वर्ग से, चुना गया जो कि विभिन्न विद्यालयों का प्रतिनिधित्त्व करती हैं।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा सम्भाव्य न्यादर्शन की साधारण यादृच्छिक विधि को प्रयुक्त किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. मानक त्रुटि
4. स्वतंत्रता अंश
5. प्रसरण विश्लेषण अथवा ऐनोवा (एफ–मान)
6. क्रान्ति मान अथवा टी–मान

परिकल्पना–1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 1

चरिता के स्त्रोत Variation	स्वतंत्रता के अंश df	वर्गों का योग SS	मध्यमानों का वर्ग Ms	F
समूहों के मध्य Bg	2	821.17	410.585	5.681*
समूहों के अन्तर्गत Wg	297	21462.802	72.265	

*** 0.01 स्तर पर सार्थक**

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के कुल आँकड़ों के मध्य बनी चरिता का एक–मार्गी विश्लेषण प्रदर्शित करती है।

यहाँ उपरोक्त तीनों समूहों के प्राप्तांकों के मध्यमानों से प्राप्त प्रसरण विश्लेषण (एफ) का मान 5.681 है जो कि समूहों के मध्य स्वतंत्रता के अंश 2 तथा समूहों के अन्तर्गत स्वतंत्रता के अंश 297 हेतु 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 4.68 से अधिक है, अतः तीनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। अतः परिकल्पना–1 निरस्त की जाती है।

परिकल्पना–1

'उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है', के निरस्त होने पर, यह ज्ञात करने के लिए कि यह अन्तर किन वर्गों की छात्राओं के मध्यमानों में आया है, इस परिकल्पना की निम्न तीन उप–परिकल्पनाओं का निर्माण, विश्लेषण एवं व्याख्या की गयी–

उप–परिकल्पना – 1.1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 2

छात्राएँ	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	अन्तर की मानक त्रुटि SE_D	मध्यमानों का अन्तर D	स्वतंत्रता के अंश df	आलोचनात्मक अनुपात C.R.
अनु. जाति	100	51.21	8.135	1.203	0.30	198	0.25
अनु. जनजाति	100	50.91	8.871				

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 51. 21 व 50.91 हैं तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 8.135 व 8.871 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 1.203 है तथा मध्यमानों का अन्तर 0.30 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 0.25 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 198 हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.97 से कम है, अतः दोनों समूहों में मध्यमान का सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः उप–परिकल्पना – 1.1 को निरस्त नहीं किया जा सकता है।

उप–परिकल्पना – 1.2

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 3

छात्राएँ	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	अन्तर की मानक त्रुटि SE_D	मध्यमानों का अन्तर D	स्वतंत्रता के अंश df	आलोचनात्मक अनुपात C.R.
अनु. जाति	100	51.21	8.135	1.165	3.35	198	2.88*
अ.पि.व.	100	54.56	8.351				

*** 0.01 स्तर पर सार्थक**

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 51.21 व 54.56 हैं तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 8. 135 व 8.351 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 1.165 तथा मध्यमानों का अन्तर 3.35 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 2.88 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 198 हेतु 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.60 से अधिक है, अतः दोनों समूहों में मध्यमान का सार्थक अन्तर पाया गया। अतः उप–परिकल्पना – 1.2 निरस्त की जाती है।

चूँकि अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान (54.56) अनु. जाति वर्ग की छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्यमान (51.21) से अधिक है। जो यह स्पष्ट करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि स्तर अनु. जाति वर्ग की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

उप–परिकल्पना – 1.3

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 4

छात्राएँ	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	अन्तर की मानक त्रुटि SE_D	मध्यमानों का अन्तर D	स्वतंत्रता के अंश df	आलोचनात्मक अनुपात C.R.
अनु. जनजाति	100	50.91	8.871	1.218	3.65	198	3.00*
अ.पि.व.	100	54.56	8.351				

*** 0.01 स्तर पर सार्थक**

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 50. 91 व 54.56 हैं तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 8.871 व 8.351 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 1.218 तथा मध्यमानों का अन्तर 3. 65 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 3.00 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 198 हेतु 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.60 से अधिक है, अतः दोनों समूहों में मध्यमान का सार्थक अन्तर पाया गया। अतः उप–परिकल्पना – 1.3 निरस्त की जाती है।

चूँकि अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान (54.56) अनु. जनजाति वर्ग की छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्यमान (50.91) से अधिक है। यह परिणाम इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि स्तर अनु. जनजाति वर्ग की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

लेखाचित्र संख्या – 1

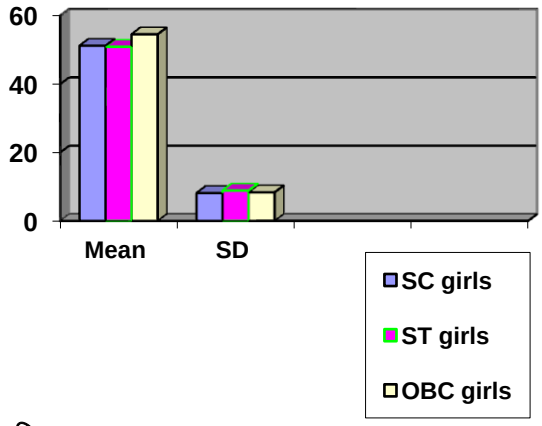

परिणाम

दत्त विश्लेषणानुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। जो कि अनु. जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं में सार्थकता स्तर 0.01 पर शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर के कारण है, अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग की छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि स्तर अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की तुलना में कम है, जबकि अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग की छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि स्तर में समानता पायी गयी। हालांकि अनु. जाति वर्ग की छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान (51.21) अनु. जनजाति वर्ग की छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्यमान (50.91) से अधिक है। लेकिन दोनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जो भी अन्तर है, वह संयोगवश ही है। उक्त अर्थापन इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग की छात्राऐं शैक्षिक उपलब्धि स्तर की दृष्टि से समान हैं, उनकी शैक्षिक उपलब्धि में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।
4. उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।

सुझाव

1. अनु. जाति एवं अनु. जनजाति वर्ग की छात्राओं के प्रति अभिभावक सजगता में वृद्धि की जानी चाहिए।
2. आरक्षित वर्गों की छात्राओं हेतु विद्यालय चयन करते समय छात्राओं की क्षमताओं पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
3. आरक्षित वर्गों में छात्राओं के प्रति छात्रों की अपेक्षा सामाजिक दृष्टिकोण में उपस्थित भिन्नता का निवारण किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तकें

1. *गुप्ता एवं गुप्ता (2007), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
2. *गैरेट, एच.ई. (1981), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, दशम् संस्करण, बी.एफ. एण्ड सन्स, बॉम्बे।*
3. *ठाकुर, हरिनारायण (2009), भारत में पिछड़ा वर्ग आन्दोलन और परिवर्तन का नया समाजशास्त्र, कल्पाज़ पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*
4. *व्यास एवं गहलोत (2010), राजस्थान की जातियाँ और सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।*
5. *शर्मा, सुरेन्द्र (2007), रिसर्च मैथडोलॉजी–शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।*
6. *हटन, जे.एच. (2002), भारत में जाति प्रथा (अनुवादित), श्री जैनेन्द्र प्रेस, दिल्ली।*

शोध–प्रबन्ध

7. *दास, रश्मिता (1994), अकादमिक सेल्फ कॉनसेप्ट, स्ट्रेस एण्ड अकादमिक परफॉरमेन्स : अ स्टडी ऑव द सिड्यूल्ड कास्ट, सिड्यूल्ड ट्राईब एण्ड जनरल, आर्ट्स एण्ड साईंस स्टूडेन्ट्स, डॉक्टरल थीसिस, जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली।*
8. *शर्मा, राजलक्ष्मी (2011), स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की आकांक्षा, आत्मविश्वास, सेवा अवधारणा*

एवं शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, डॉक्टरल थीसिस, जैन विश्व भारती यूनिवर्सिटी, लाडनूँ।

9. *शैल, प्रभा, (2003), जनपद फिरोजाबाद के लघु एवं वृहद् परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव के, उनके व्यक्तिगत मूल्यों, सृजनात्मक एवं शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव, डॉक्टरल थीसिस, बुन्देलखण्ड यूनिवर्सिटी, झाँसी।*
10. *सैनी, मोनिका (2010), अ स्टडी ऑव अकादमिक अचिवमेन्ट ऑव सिड्यूल्ड कास्ट सैकण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू स्टडी हैबिट्स, होम एनवायरमेन्ट एण्ड स्कूल एनवायरमेन्ट, डॉक्टरल थीसिस, महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी, रोहतक।*

Magazine & Journals

11. *Abraham, Y. (2014), Emotional Intelligence, Self-esteem and Academic Achievement of Professional Course Students, EDUTRACKS, Vol. 14(2), pp 25-33.*
12. *Lawrence, A.S.Arul. (2014), Relationship Between Study Habits and Academic Achievement of Higher Secondary School Students, Education, Vol. 4(6), pp 143-145.*
13. *Pandey, Shriniwas & Pandey, Rajesh kumar. (2009), Jawahar Navoday Vidyalay me Kishorawastha ke samayojan evam Shaikshik Uplabdhi ka Adhyyan, Indian Journal of Teacher Education: Anwesika, Vol. 6(2), pp 133-141.*
14. *Pany, Sesadeba. (2014), Academic Achievement of Secondary School Students having differential levels of Problem Solving Ability, MERI Journal of Education, Vol. 9(1), pp 77-82.*
15. *Pillai, Anil Kumar MB. (2014), A Study of Learner Characteristics, School Environment, Achievement and Placement of Scheduled Caste Students of Madhya Pradesh, Indian Educational Review, Vol. 52(1), pp 59-80.*
16. *Rai, Geeta. (2014), Impact of Parental Encouragement on Level of Aspiration and Academic Performance: A Comparative Study on Adolescents of Uttarakhand, Indian Educational Review, Vol. 52(1), pp 98-110.*
17. *Savasci, Havva Sebile & Tomul, Ekber. (2013), The Relationship between Educational Resources of School and Academic Achievement, International Education Studies, Vol. 6(4), pp 114-123.*
18. *Saxena, Sumanlata & D.Laxmi. (2013), Academic Achievement As A Function of Level of Aspiration of Residential and Non-Residential School Students, Experiments in Education, Vol. 41(3), pp 19-22.*
19. *Yadav, Meenu. (2014), Emotional Intelligence, Creativity and their Impact on Academic Achievement of Senior Secondary Class Students, EDUTRACKS, Vol. 13(10), pp 46-48.*
20. *Yadav, Rekha. (2015), Self-concept,Study Habits and Academic Achievement of high school students studying in government and public schools, EDUTRACKS, Vol. 14(6), pp 35-36.*

Websites

21. *www.eric.ed.gov*
22. *www.scholar.google.com*
23. *www.shodhganga.inflibnet.ac.in*